Three days farmers training at Pauri, Uttrakhand entitled“Good Agricultural and Collection Practices for Medicinal Plants” during 16 to 18 October, 2018under project of National Medicinal Plants Board has been conducted byDr. P. L. Saran (Senior Scientist, ICAR-DMAPR).

Three days farmers training at Pauri, Uttrakhand entitled“Good Agricultural and Collection Practices for Medicinal Plants” during 16 to 18 October, 2018under project of National Medicinal Plants Board has been conducted byDr. P. L. Saran (Senior Scientist, ICAR-DMAPR). The aim of training is to provide information to farmers about Good Agricultural and Collection Practices formedicinal plantsin hilly areas. The training chaired by Dr. Ratan kumar, (Joint Director of Horticulture,Deharadun), Dr. Narendra Kumar (Chief Horticulture Officer, Pauri, Uttrakhand), Mr. P. S. Satudi (Assistant Director of Horticulture,Pauri, Uttrakhand). Fifty-five farmers participated from different districts of Garhwal region.

Ten lectures have been delivered on different aspects of MAPs GACP. Third day of training, farmers visited Government medicinal garden at Khandusain and Khirsu. In the last, the farmers gave their valuable feedback. Press media coveredprogram highlights in different newspapers.

Farmers' Trai on
"Good Agricultural and Co on Practices
(GACP) for Me

Farmers' Training on
"Good Agricultural and Collection P
(GACP) for Medicinal Plants
October 16-18, 2018

तीन बजे जोरदार बर्फबारी शुरू हो गई, जो भारी बर्फबारी को देखते हुए पुलिस ने सभी से नीचे जा रहा है। जन संवाद यात्रा कर्णप्रयाग, घाट होते हुए

समाचार पत्र दैनिक जागरण दि० 21-10-18 पृ.सं. (04)

औषधीय खेती बन सकती है आजीविका

संवाद सहयोगी, पौड़ी: जिला मुख्यालय पौड़ी में औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय गुजरात की ओर से आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न हो गई है। जिसमें वैज्ञानिकों ने पर्वतीय क्षेत्र में औषधीय व सगंधीय पादप खेती को लेकर विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला में जनपद पौड़ी, टिहरी, रुद्रप्रयाग के चयनित किसानों ने प्रतिभाग किया।

जिला मुख्यालय पौड़ी स्थित प्रसार प्रशिक्षण सभागार में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस मौके पर अनुसंधान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पीएल सारन ने कहा कि औषधीय व सगंधीय पादपों की खेती को कलस्टर के रूप में विकसित किया जा सकता है। जिससे किसानों की आर्थिकी मजबूत होगी। उन्होंने सफेद मुसली, अश्वगंधा, ब्राह्मी, तुलसी, लेमन ग्रास, मुलेठी आदि की खेती की विस्तार से जानकारी दी। संगधीय पादप केंद्र सेलाकुई के वैज्ञानिक डॉ. सुनील शाह ने बताया कि उत्तराखंड में सगंधीय फसल को लेकर सरकार के स्तर पर विभिन्न योजनाएं संचालित हो रही हैं। जिसका लाभ किसानों को मिलने लगा है। संयुक्त निदेशक उद्यान डॉ. रतन कुमार ने कहा कि उद्यानीकरण के साथ-साथ औषधीय सगंध पौधों की खेती किसानों की आजीविका को निरंतरता देने में अहम हो सकती हैं। जड़ी-बूटी शोध एवं विकास संस्थान गोपेश्वर के वैज्ञानिक डॉ. एके भंडारी ने कैमोमाइल, बड़ी इलायची, सतावर, काला जीरा आदि की खेती को लेकर किसानों को जानकारी दी। इस अवसर पर डीएचओ पौड़ी डॉ. नरेंद्र कुमार, विश्वजीत, राकेश शाह, ऋषि राम, विक्रम रावत, पंकज स्वरूप रतूड़ी आदि मौजूद थे।

पौड़ी में आयोजित कार्यशाला के दौरान काश्तकारों के साथ वैज्ञानिक • जागरण

धूमधाम से मनाई जाएगी माणिक लाल की जयंती

रुद्रप्रयाग: भारतीय दलित साहित्य अकादमी व सेवास्तंभ के संयुक्त

सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देंगे

संवाद सूत्र, जोशीमठ: देवभूमि उत्तराखंड में ग्रामीण एवं सांस्कृतिक पर्यटन की

योजना

• विश्व सांस्कृतिक धरोहर सलूड़ डुंग्रा

प्रयासों से देश-विदेश से आए पर्यटकों को यहां की संस्कृति से रूबरू होने का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा कि सलूड़

अकसर संदेह पैदा करता है।

पृ. सं. (06) अमर उजाला 19/10/18

पहाड़ में बद्री बेरी से सुधरेगी आर्थिकी

औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती का प्रशिक्षण

अमर उजाला ब्यूरो

पौड़ी। पहाड़ में बद्री बेरी से किसानों की आर्थिकी सुधरेगी। पौड़ी में औषधीय और सगंध पौधों की खेती एवं संग्रहण तकनीक पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने यह बात कही।

पौड़ी में प्रसार प्रशिक्षण केंद्र में औषधीय एवं सगंध पौध अनुसंधान निदेशालय आनंद गुजरात की ओर से आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में जड़ी बूटी शोध एवं विकास संस्थान गोपेश्वर के वैज्ञानिक डा. एके भंडारी ने कहा कि पहाड़ की भौगोलिक स्थिति बद्री बेरी की फसल के लिए अनुकूल है। बड़े स्तर पर इसकी खेती की जा सकती है। अनुसंधान निदेशालय गुजरात से आए डा. परमेश्वर लाल सारन एवं विश्वजीत पटेल ने कहा कि जड़ी बूटियों की बुआई एवं उसे एकत्र करने के दौरान यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि खेत में कुछ जड़ी बूटियों को छोड़ दिया जाना चाहिए ताकि उससे आगे भी उत्पादन लिया जा सके। डा. परमेश्वर लाल सारन ने कहा कि पहाड़ में श्यामा तुलसी की खेती भी किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती है। कार्यशाला में संयुक्त निदेशक उद्यान डा. रतन कुमार व मुख्य उद्यान अधिकारी डा. नरेंद्र कुमार आदि मौजूद रहे। संचालन सहायक विकास अधिकारी पंकज स्वरूप रतूड़ी ने किया।